लोकमत समाचार

नागपुर ● बुधवार, 22 फरवरी 2017

रिश्तों की बदलती इबारत

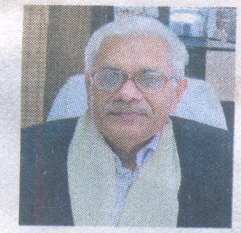

गिरीश्वर मिश्र
कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
misragirishwar@gmail.com

रिश्ते सामाजिक जीवन के प्राण होते हैं और इसके पुष्ट जैविक व सांस्कृतिक आधार हैं. सामाजिकता की संवेदना नवजात शिशु में भी परिलक्षित होती है. वह अपनी मां का चेहरा जन्म के कुछ घंटों बाद ही पहचानने लगता है. उसमें सामाजिक तत्परता कई तरह से दिखती है. वह आहट पहचानता है, लोगों के हाव-भाव का अनुकरण करता है, यदि उपस्थित लोग ध्यान न दें तो ध्यान आकर्षित करता है. वही शिशु रिश्तों के पायदानों पर चढ़ते हुए जिंदगी में एक-एक मुकाम तय करता जाता है.

सामान्य जीवन में संबंधों के पनपने का आधार भौतिक निकटता तो है पर उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है पारस्परिकता और अनुपूरकता अर्थात् एक दूसरे का हित साधन और एक की कमी को दूसरे द्वारा पूरा किया जाना. यह सब बड़े स्वाभाविक ढंग से होता है. सामाजिकता की दुर्निवार मानवीय प्रवृत्ति के चलते हर किसी में एक दूसरे को रचने-बनाने की तीव्र आकांक्षा मौजूद रहती है. जीवन के ताने-बाने में परस्पर-निर्भरता और सहयोग बड़े कीमती होते हैं. दिल मिल जाएं तो एक और एक ग्यारह भी हो सकते हैं. रिश्ते सचमुच हमको बनाते हैं.

सच कहें तो हर आदमी एक चित्र सा है और समाज उस चित्र की पृष्ठभूमि होता है. चित्र के लिए समाज आधार सामग्री देता है. मनुष्य दोनों में शामिल है. हां, चित्र और पृष्ठभूमि की भूमिकाएं तथा उनकी परिस्थितियां एक सी नहीं होतीं. उनमें बदलाव आता है. दोनों ही देशकाल में गतिशील रहते हैं. साथ ही दोनों को विभाजित करने वाली सीमा रेखा या परिधि 'पोरस' या छिद्रों वाली होती है जिसके कारण दोनों के बीच आवाजाही रहती है. 'आम' और 'खास' बदलते रहते हैं. देश या समूह के साथ तादात्मीकरण होने पर उन सबकी सारी विशेषताएं व्यक्ति में आरोपित हो जाती हैं चाहे वे उनमें वास्तव में हों या नहीं.

रिश्तों के कई तरह के प्रयोजन हो सकते हैं. रिश्ते स्वयं अपने में महत्वपूर्ण हो सकते हैं और वे नैमित्तिक भी हो सकते हैं जो किसी दूसरे लक्ष्य को साधते हैं. आज संबंधों को व्यक्ति की सत्ता की प्रतिष्ठा के साथ जोड़ा जा रहा है. ऐसे में रिश्ते अराजक हो रहे हैं. कभी रिश्तों में गहरा निवेश होता था. उन्हें बचा कर रखने, संजोने के लिए, टूटने से बचाने के लिए आदमी कोशिश करता था. वह सतर्क रहता था कि उसके व्यवहार से रिश्तों में दरार न आए.

वस्तुतः मनुष्य की सांस्कृतिक यात्रा समय और गुणवत्ता के लिहाज से बड़ी लंबी रही है. खानाबदोश जीवन से पशु पालन, कृषि, उद्योग और अब तकनीकी युग में प्रवेश करते हुए हमारे जीवन में कई क्रांतिकारी बदलाव आए हैं. साइबर युग में पहुंच कर हम 'वर्चुअल' दुनिया को तरजीह दे रहे हैं. ई-मेल से रिश्तों की दुनिया पाटी जा रही है. हमारे सामाजिक सरोकार दूसरे किस्म के हो रहे हैं और उनके लिए आवश्यक कोशिश भी भिन्न तरह की अपेक्षित है. नई मशीनों और उपकरणों की सहायता से सुविधाएं बढ़ी हैं पर नए काम भी आ पड़े हैं. थोड़े से समय में अनगिनत काम करने होते हैं. श्रम के स्वभाव में बदलाव आया है. समय कम पड़ रहा है. ऐसे में रिश्तों का गणित नए सूत्र खोज रहा है.